जो रातों को कोशिशों में गंवा
देते हैं, वहीं सपनों की
चिंगारी को और हवा देते हैं..

हिंदी संधि ट्रिक

स्वर संधि की परिभाषा

जब दो स्वर आपस में जुड़ते हैं या दो स्वरों के मिलने से उनमें जो परिवर्तन आता है, तो वह स्वर संधि कहलाती है। जैसे :

विद्यालय : विद्या + आलय

पर्यावरण : परी + आवरण

मुनींद्र : मुनि + इंद्र

स्वर संधि के प्रकार

स्वर संधि के मुख्यतः पांच भेद होते हैं:

दीर्घ संधि

गुण संधि

वृद्धि संधि

यण संधि

अयादी संधि

दीर्घ संधि :- ट्रिक :- बड़ी मात्रा लगी हो

दीर्घ संधि में कोई बड़ी मात्रा जरूर होगी।

जैसे - परीक्षा -परि + ईक्षा

भानूदय - भानु+ उदय,

मुनींद्र - मुनि+इंद्र

भोजनालय- भोजन + आलय,

गुण संधि :-

किसी शब्द में 'ए' व 'ओ' की मात्रा हो तो वहां गुण संधि होती है।

ट्रिक :- ◌े , ◌ो (ऐ और ओ) की एक मात्रा लगी हो

जैसे :- महा + उत्सव : महोत्सव (आ + उ = ओ)

आत्मा + उत्सर्ग : आत्मोत्सर्ग (आ + उ = ओ)

धन + उपार्जन : धनोपार्जन (अ + उ = ओ)

सुर + इंद्र : सुरेन्द्र (अ + इ = ए)

वृद्धि संधि :-

जहां शब्द में ऐ या औ की मात्रा लगी हो वहां वृध्दि संधि होगी ।

ट्रिक :- दो मात्राएं ◌ै , ◌ौ (ऐ व औ) लगी हों ।

जैसे:- महा + ऐश्वर्य : महैश्वर्य **(आ + ऐ = ऐ)**

महा + ओजस्वी : महौजस्वी **(आ + ओ = औ)**

परम + औषध : परमौषध **(अ + औ = औ)**

जल + ओघ : जलौघ **(अ + ओ = औ)**

यण संधि :- *ट्रिक:- शब्द में य,र,व, के पहले आधा अक्षर आये*

वहां यण संधि होती है।

जैसे :- अति + अधिक : अत्यधिक **(इ + अ = य)**

प्रति + अक्ष : प्रत्यक्ष **(इ + अ = य)**

प्रति + आघात : प्रत्याघात **(इ + आ = या)**

अति + अंत : अत्यंत **(इ + अ = य)**

अयादि संधि :-ए, ऐ, ओ,औ की मात्रा न हो

ए, ऐ और ओ, औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

ट्रिक:- अय्, आय्, अव् और आव् का उच्चारण हो।

जैसे:- श्री + अन : श्रवण

पौ + अक : पावक

पौ + अन : पावन

नै + अक : नायक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे-

शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। (क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

trick

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज। क् + ई = गी वाक + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

व्यंजन संधि

यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे -

क् + म = वाक + मय = वाङ्मय

च् + न = अच् + नाश = अंनाश

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास

त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय

व्यंजन संधि

त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -

त् + भ = ब्भ सत् + भावना = सब्भावना

त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = ब्भ भगवत् + भक्ति = भगवब्भक्ति

त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

व्यंजन संधि

त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -

त् + च = च्च	उत् + चारण = उच्चारण
त् + ज = ज्ज	सत् + जन = सज्जन
त् + झ = ज्झ	उत् + झटिका = उज्झटिका
त् + ट = ट्ट	तत् + टीका = तट्टीका
त् + ड = ड्ड	उत् + डयन = उड्डयन
त् + ल = ल्ल	उत् + लास = उल्लास

व्यंजन संधि

त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे -

त् + श् = च्छ उत् + श्वास = उच्छ्वास

त् + श = च्छ उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

त् + श = च्छ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

व्यंजन संधि

त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे -

उत् + हरण

उ + द् + ध + र + ण

उद्धरण ✓

त् + ह = द्ध	उत् + हार = उद्धार
त् + ह = द्ध	उत् + हरण = उद्धरण
त् + ह = द्ध	तत् + हित = तद्धित

तत् + द् + धि

तद्धित

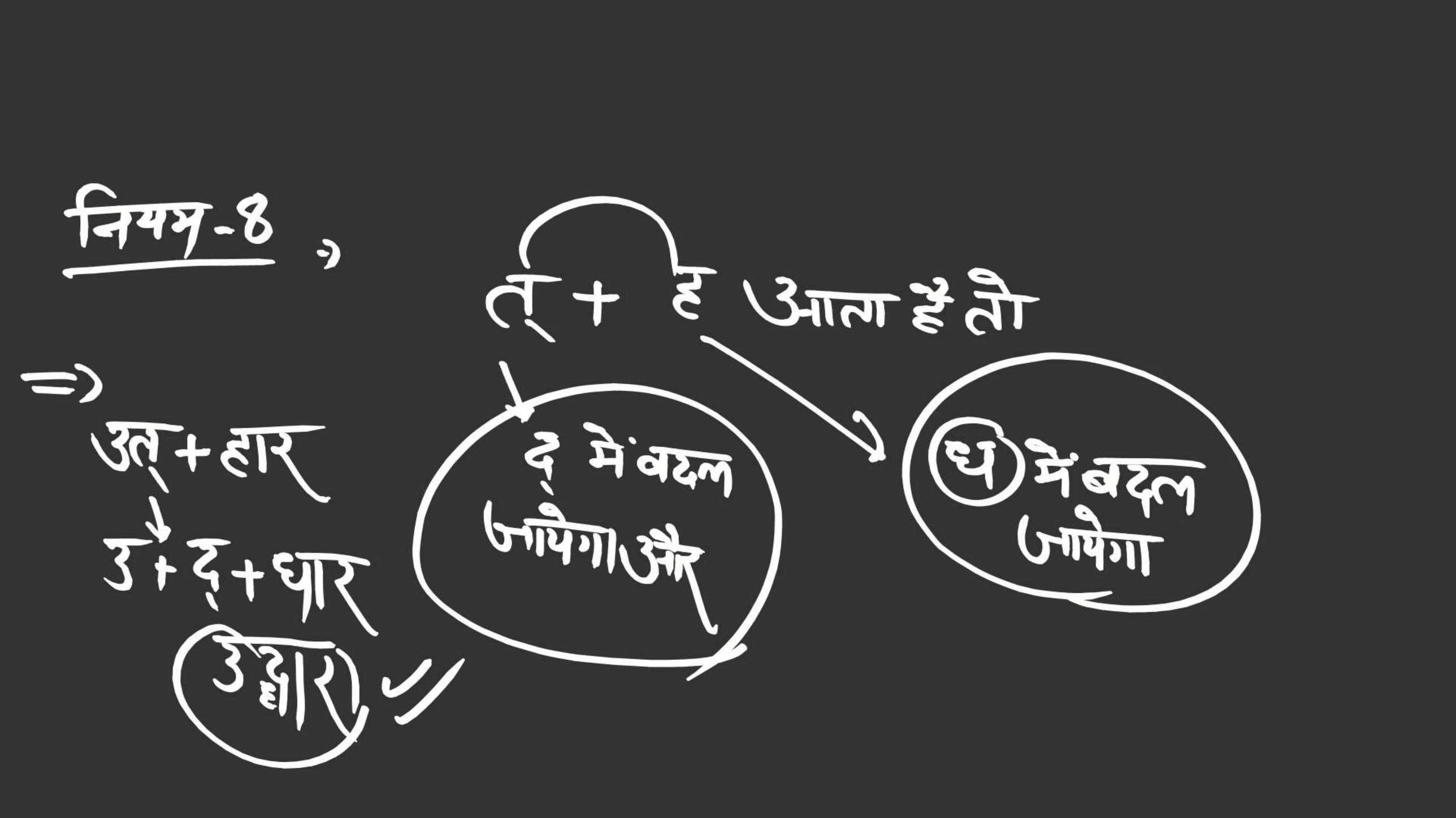

नियम-8 →

त् + ह आता है तो

त् → द् में बदल जायेगा और

ह → ध में बदल जायेगा

⇒ उत् + हार

उ + द् + धार

उद्धार ✓

व्यंजन संधि

स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है।

जैसे -

अ + छ = अच्छ	स्व + छंद = स्वच्छंद
आ + छ = आच्छ	आ + छादन = आच्छादन
इ + छ = इच्छ	संधि + छेद = संधिच्छेद
उ + छ = उच्छ	अनु + छेद = अनुच्छेद

व्यंजन संधि

यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

म् + च् = किम् + चित = किंचित

म् + क = किम् + कर = किंकर

म् + च = सम् + चय = संचय

म् + त = सम् + तोष = संतोष

म् + ब = सम् + बंध = संबंध

म् + प = सम् + पूर्ण = संपूर्ण

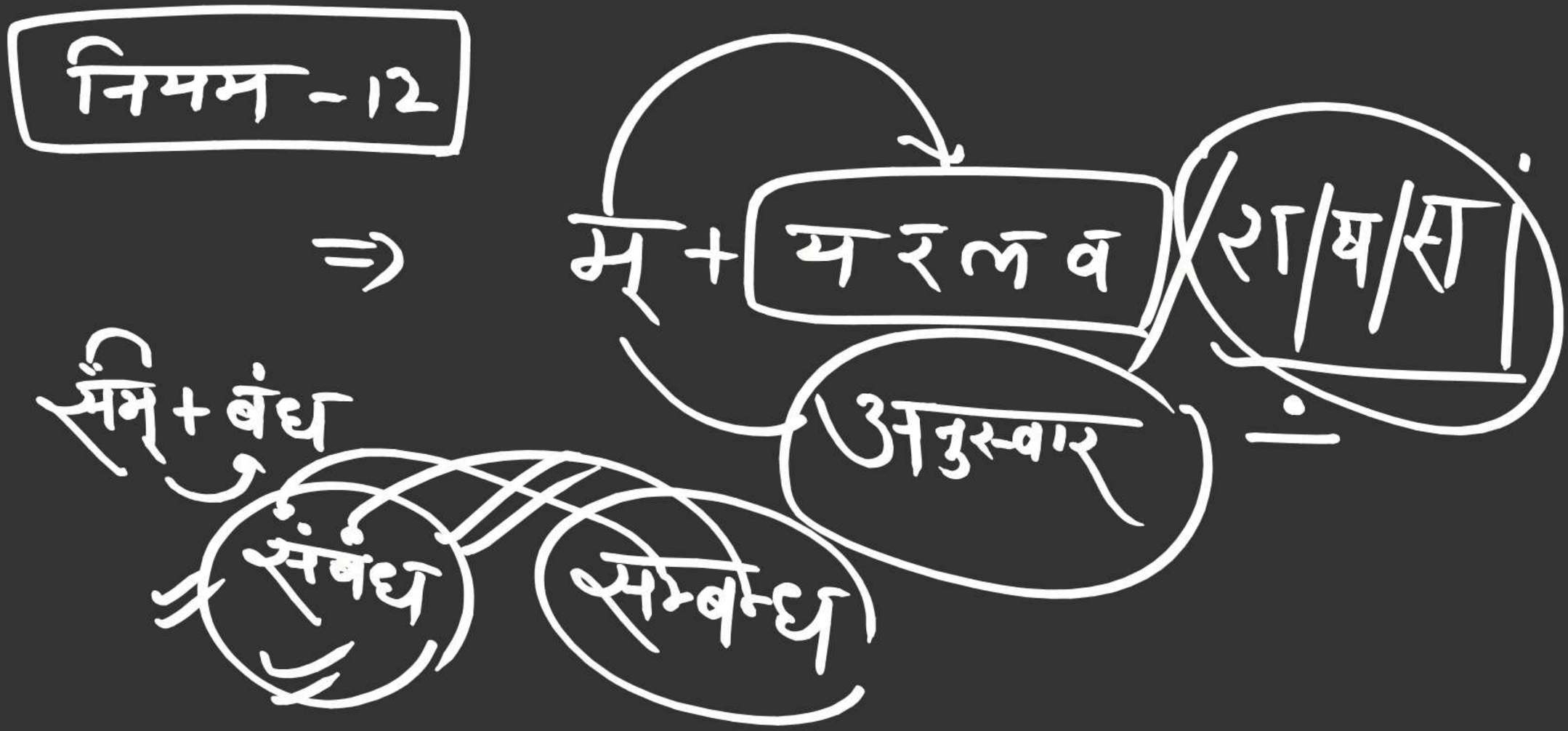
नियम - 12
⇒
सम् + बंध
संबंध
सम्बन्ध
म् + य र ल व
श/ष/स
अनुस्वार
ं

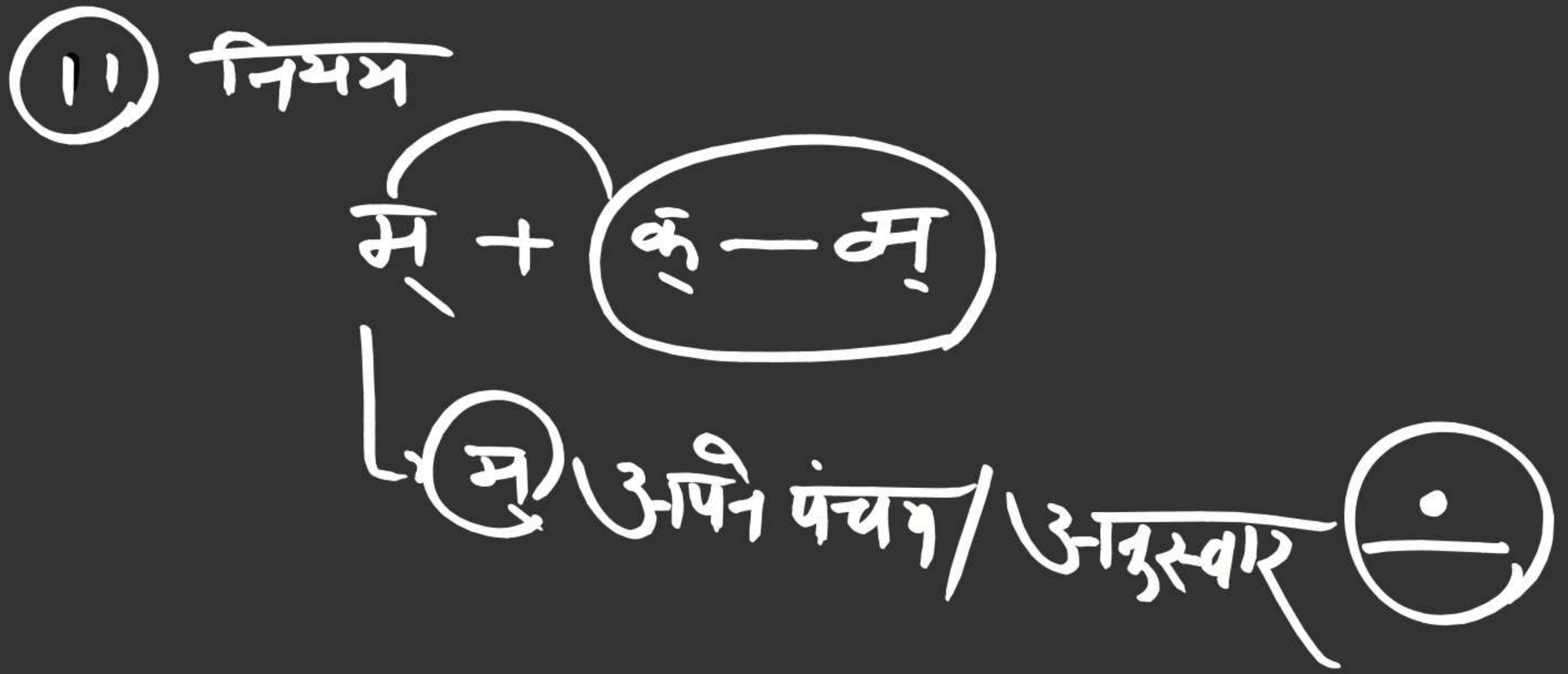
(11) नियम
म् + क् — म्
म् अपने पंचम/अनुस्वार

व्यंजन संधि

म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे -

म् + य = सम् + योग = संयोग

म् + र = सम् + रक्षण = संरक्षण

म् + व = सम् + विधान = संविधान

म् + श = सम् + शय = संशय

म् + ल = सम् + लग्न = संलग्न

म् + स = सम् + सार = संसार

सम् + शय
संशय

सम् + विधान
संविधान

सम् + योग
संयोग

सम् + रक्षण
संरक्षण

अलम् + कार
अलंकार

व्यंजन संधि

स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -

नि + सिद्ध

निषिद्ध

भ् + स् = ष अभि + सेक = अभिषेक

नि + सिद्ध = निषिद्ध

वि + सम = विषम

⇒ **नियम - 13**

अ/आ + स हो तो

↳ जो है वह ष में बदल जाता है

अ/आ ✗ (कोई अन्य स्वर आता है तो)

अभि + सेक

अभिषेक

(1) व्यंजन सन्धि का उदाहरण नहीं है–

(a) उत् + चारणम् = उच्चारणम्

(b) रामस् + टीकते = रामष्टीकते

स्वर

~~(c)~~ गंगा + उदकम् = गंगोदकम्

(d) सत् + चित् = सच्चित्

'अभिन्न' शब्द का सन्धि–विच्छेद होगा–

(a) अभि + न्न ✗

(b) अ + भिन्न ✗

(c) अभित् + न ✓

(d) अनि् + न ✗

'अनंत' की सही सन्धि होगी–

(a) अन् + अंत

(b) अन + अंत

(c) अनन् + त

(d) अनन + त्

'तकदीर' का शुद्ध सन्धि–विच्छेद है–

(a) तद + आकार
(b) तत् + आकार
(c) तदा + कार
(d) तदा + आकार

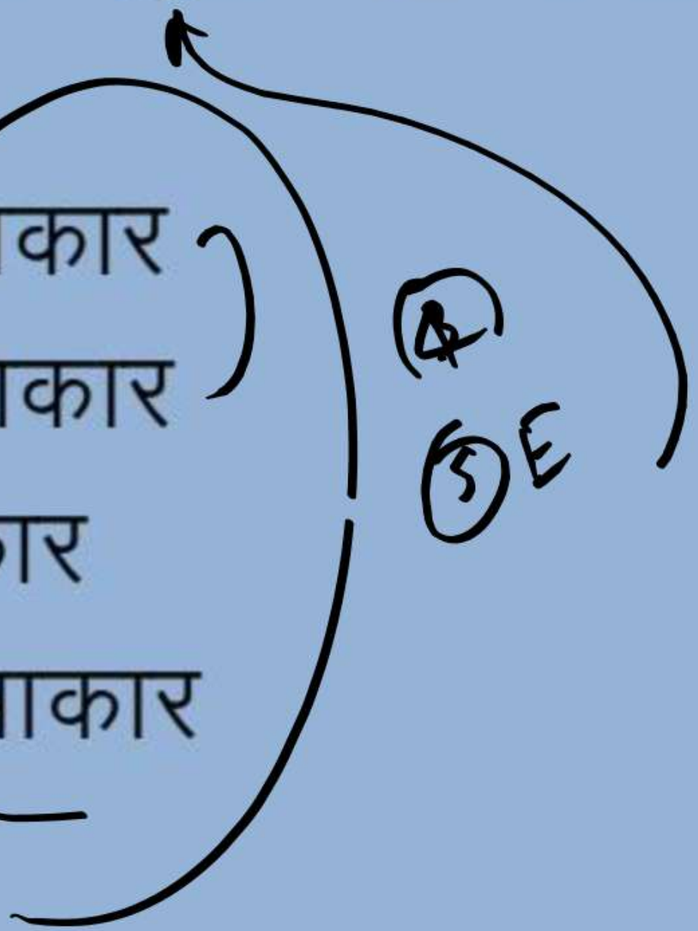

दया

'उद्योग' का सन्धि होगा–

(a) उत् + योग

(b) उद् + योग

(c) उध् + योग

(d) उत् + अयोग

'ऋग्वेद' का सही सन्धि–विच्छेद है:

(a) ऋग + वेद

(b) ऋग् + वेद

~~(c)~~ ऋक् + वेद

(d) ऋ + वेद

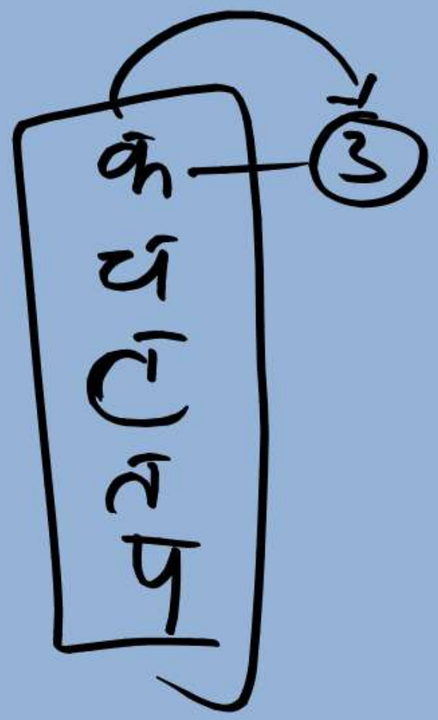

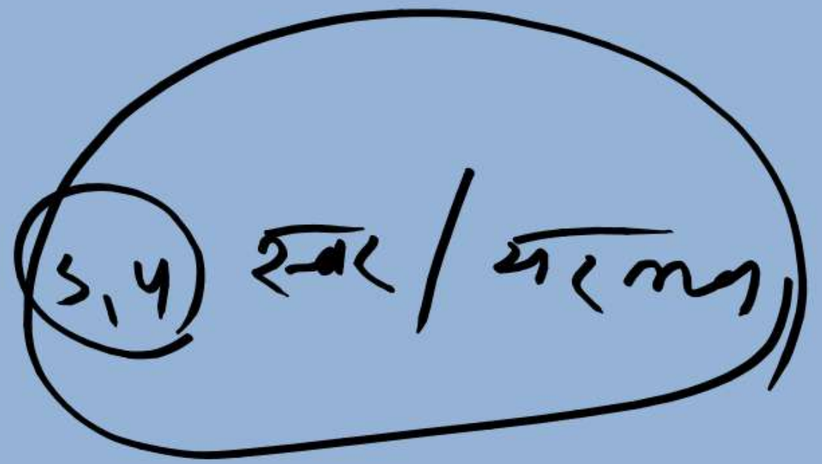

दिक् + गज' की सन्धि है–

(a) दिकगज

(b) दिग्गज ✓

(c) दिगज

(d) कोई नहीं

'तल्लीन' शब्द में सही सन्धि–विच्छेद है–

(a) तल् + लीन

(b) तद् + लीन

(c) तत् + लीन

(d) तत् + लीन

'जगन्नाथ' शब्द में सही सन्धि है–

(a) स्वर सन्धि

(b) विसर्ग सन्धि

(c) व्यंजन सन्धि

(d) इनमें से कोई नहीं

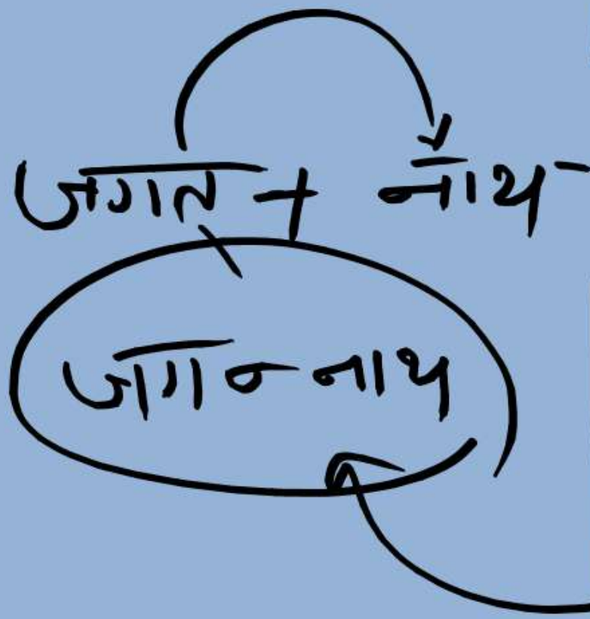

किस शब्द में व्यंजन सन्धि है?

(a) सज्जन

(b) परोपकार

(c) विद्यालय

(d) इत्यादि

सत् + जन

पर + उपकार

विद्या + आलय

इति + आदि

भगवद्गीता का सन्धि–विच्छेद है–

(a) भगवद् + गीता

(b) भग + वद + गीता

(c) भगवत् + गीता

(d) भग + वद्गीता

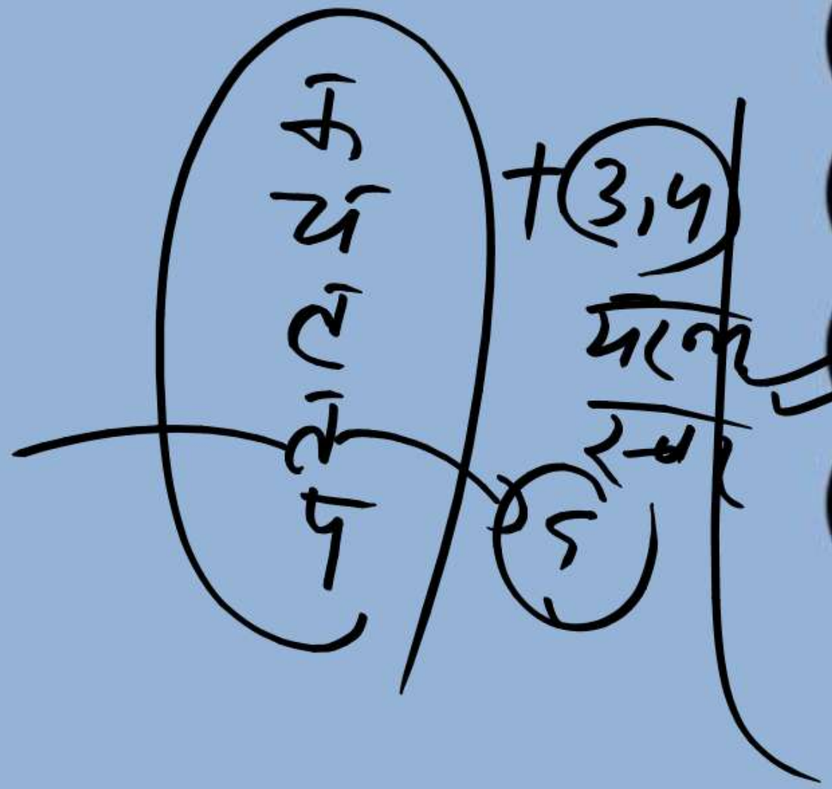

नवौढ़ा का सन्धि–विच्छेद है–

(a) नव + उढ़ा

(b) नवो + ढ़ा

(c) नव + ऊढ़ा

(d) न + औढ़ा

+उ/ऊ

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आये तो दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं। यह स्वर सन्धि कहलाती है–

(a) दीर्घ स्वर सन्धि
(b) वृद्धि स्वर सन्धि
(c) गुण स्वर सन्धि
(d) अयादि स्वर सन्धि

'दुष्प्रकृति' शब्द का सन्धि–विच्छेद है–

(a) दुस् + प्रकृति

(b) दुः + प्रकृति

(c) दृश्य + प्रकृति

(d) दुसप + कृति

किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

(a) मतैक्यम्

(b) महौषधि

(c) तरोश्छाया

(d) विष्णवे

'बृहस्पति' का सन्धि–विच्छेद है–

(a) बृहस + पति

(b) बृहस् + पति

(c) बृहः + पति

(d) बृहश + पति

निष्काम

(a) निष् + काम

(b) नि: + काम

(c) निश + काम

(d) निस् + काम